सहारे...

अनजाने में मेरी ज़िंदगी को आसान बनाने वाली मेरी अमेरिकी सहेलियाँ!

थैंक्सगिविंग : कुछ रिश्तों के नाम, कुछ अनकहे आभार के नाम



थैंक्सगिविंग का अर्थ केवल टर्की, कद्दू की पाई, सजे हुए डाइनिंग टेबल और परिवार के साथ बिताया गया एक खूबसूरत दिन नहीं है। यह उन लोगों को धन्यवाद कहने का अवसर भी है, जिन्होंने हमारी जिंदगी में शायद कभी कोई बड़ा काम नहीं किया, लेकिन अपने छोटे-छोटे व्यवहारों से हमारे जीवन को बहुत आसान और सुंदर बना दिया।

आज थैंक्सगिविंग पर मैंने अपनी कुछ अमेरिकी सहेलियों को डिनर पर आमंत्रित किया है। ये वे महिलाएँ हैं जो इसी देश की मिट्टी में पली-बढ़ी हैं, जिनके लिए यहाँ की संस्कृति, जीवनशैली और सामाजिक व्यवहार बिल्कुल स्वाभाविक हैं। लेकिन मेरे लिए वे अनजाने में ही इस देश को समझने की कुछ बेहतरीन शिक्षिकाएँ रही हैं। जब हम अपना देश छोड़कर किसी दूसरे देश में आते हैं, तो केवल भौगोलिक सीमाएँ नहीं बदलतीं, जीवन के तौर-तरीके भी बदल जाते हैं। भाषा, सामाजिक व्यवहार, दोस्ती, निजी संबंध और नागरिक जिम्मेदारियों की परिभाषाएँ भी नई होती हैं। ऐसे में सबसे बड़ी चुनौती होती है कि हम नए समाज में घुलें-मिलें भी और अपनी मूल पहचान भी न खोएँ।

मेरी इन सहेलियों ने मुझे यह संतुलन बहुत सहजता से सिखाया।

उन्होंने मुझे सिखाया कि यहाँ किसी की निजी जिंदगी में अनावश्यक दिलचस्पी लेना दोस्ती का प्रमाण नहीं, बल्कि उसकी निजता में हस्तक्षेप माना जा सकता है। किसके घर में क्या चल रहा है, कौन कहाँ जा रहा है, किसके परिवार में क्या समस्या है, किसकी कितनी कमाई है या निजी जीवन में कौन क्या निर्णय ले रहा है–इन सब बातों को जानना न तो जरूरी है और न ही दोस्ती की शर्त। यहाँ लोगों की जिंदगी में एक अदृश्य लेकिन बहुत सम्मानजनक सीमा होती है, जिसे Personal Space कहते हैं। आप किसी के अच्छे मित्र हो सकते हैं, उसके साथ हँस सकते हैं, कॉफी पी सकते हैं, घूम सकते हैं, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आपको उसकी पूरी निजी जिंदगी का पासवर्ड मिल गया है।

दोस्ती की एक और खूबसूरत परिभाषा मैंने इन्हीं से सीखी। यहाँ रिश्ते कई बार जीवन के अलग-अलग पड़ावों और क्षेत्रों में अपनी अलग पहचान रखते हैं। जिम की दोस्ती जिम तक, वर्कप्लेस की दोस्ती कार्यस्थल तक और किसी सामाजिक गतिविधि की दोस्ती उस गतिविधि तक सीमित रह सकती है। इसका अर्थ यह नहीं कि आत्मीयता नहीं है, बल्कि यह कि हर संबंध को उसकी अपनी जगह और स्वतंत्रता देना भी एक संस्कार है।

धीरे-धीरे मैंने समझा कि किसी के साथ अच्छा समय बिताने के लिए उसकी पूरी जिंदगी में शामिल होना जरूरी नहीं। कभी-कभी किसी के जीवन में एक खूबसूरत जगह होना ही पर्याप्त होता है।इन सहेलियों ने मुझे इस देश के छोटे-छोटे नागरिक संस्कार भी सिखाए। समय की पाबंदी, अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजगता, सार्वजनिक स्थानों पर दूसरों की सुविधा का ध्यान रखना, नियमों का सम्मान करना, अपनी बात स्पष्टता से कहना और दूसरों की असहमति को सहजता से स्वीकार करना–ये सब बातें मैंने किसी किताब से नहीं, बल्कि इनके रोजमर्रा के व्यवहार से सीखीं। सबसे अच्छी बात यह रही कि उन्होंने कभी मुझे यह महसूस नहीं कराया कि मैं किसी दूसरे देश से आई हूँ और मुझे यहाँ के तौर-तरीके सीखने की जरूरत है। उन्होंने अपने सहज व्यवहार से मुझे अपने बीच जगह दी। न कोई औपचारिकता, न कोई उपदेश, न कोई अपेक्षा। बस एक खुला हुआ दिल और एक सहज मुस्कान।आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो महसूस होता है कि किसी देश में बसना केवल वहाँ घर खरीद लेने, नागरिकता प्राप्त कर लेने या वर्षों तक रहने से नहीं होता। उस देश के समाज को समझना, उसके लोगों के व्यवहार को स्वीकारना और उसके अच्छे संस्कारों को अपने जीवन का हिस्सा बनाना भी बसने की प्रक्रिया है।

लेकिन इस पूरी यात्रा में मैंने एक बात हमेशा संभालकर रखी–अपना अस्तित्व!

मैंने अपनी भाषा, अपनी भारतीयता, अपनी रुचियों, अपने लेखन, अपने सामाजिक सरोकारों और अपनी सांस्कृतिक पहचान को कभी पीछे नहीं छोड़ा। बल्कि इस नए परिवेश ने मुझे अपने भीतर की संभावनाओं को और निखारने का अवसर दिया। मैं यहाँ की संस्कृति से सीखती रही, लेकिन अपनी जड़ों से जुड़ी रही। शायद इसी का नाम वास्तविक सांस्कृतिक समन्वय है। आज मैं इस देश में केवल रह नहीं रही, बल्कि अपनी पसंद, अपनी स्वतंत्रता और अपने व्यक्तित्व के साथ सहजता से जी रही हूँ। इसमें मेरे परिवार के साथ-साथ उन लोगों का भी योगदान है, जिन्होंने शायद कभी सोचा भी नहीं होगा कि उनका सामान्य-सा व्यवहार किसी दूसरे देश से आई महिला के जीवन में इतनी बड़ी भूमिका निभा रहा है।

इसलिए आज के इस थैंक्सगिविंग डिनर पर मेरी मेज पर केवल भोजन नहीं सजेगा, कुछ अनकहे आभार भी सजेंगे।

मैं अपनी इन सहेलियों से कहना चाहती हूँ कि आपने मुझे कभी कोई पाठ नहीं पढ़ाया, लेकिन जीवन के कई महत्वपूर्ण पाठ सिखा दिए। आपने मुझे इस देश का परिचय केवल इसकी सड़कों, इमारतों और सुविधाओं से नहीं, बल्कि इसके सामाजिक व्यवहार और नागरिक संस्कारों से कराया।

आपने मुझे अपनाया, मुझे सहज महसूस कराया और बिना किसी प्रयास के मेरे जीवन का एक सुंदर हिस्सा बन गईं।

आज मैं आपको केवल दोस्त होने के लिए धन्यवाद नहीं कह रही, बल्कि उस सहजता के लिए धन्यवाद कह रही हूँ, जिसके कारण मैं इस देश में रहते हुए भी स्वयं को पूरी तरह अपने जैसा महसूस कर पाती हूँ।

शायद थैंक्सगिविंग का सबसे सुंदर अर्थ यही है–कुछ लोग हमारी जिंदगी में आते हैं, उन्हें पता भी नहीं चलता कि उन्होंने हमारे लिए क्या किया है, और हम उम्र भर उनके प्रति कृतज्ञ रहते हैं।

नीना जैन लाइफ कोच दूरदर्शन एंकर

पिता की इच्छा

मैंने अपने करियर की शुरुआत एम आर की नौकरी से की थी



मैं यहां आया तो था पढ़ने के लिए मगर पैसों कि कमी और परिवार का सपोर्ट ना मिलने की वजह से मुझे अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी और नौकरी करना पड़ा ।

मेरी पहली तनख्वाह थी 2600 रु जब मैं डाक्टर के चेम्बर में उन से मिलने के लिए जाता था तो मन में बस एक ही ख्याल आता था । काश ... !! मेरे बच्चे भी डाक्टर बन पाते और मैं उन से मिलने के लिए आता तो कितना मजा आता..?? मैं गर्व से कहता ये मेरे बच्चे हैं शायद मेरे लिए इससे बड़ी और कोई खुशी हो ही नहीं सकती है ।।

उस वक्त तो मेरी शादी भी नहीं हुई थी । तभी से मैंने सपने सजाने लगे फिर कुछ सालों बाद मेरी शादी हुई मेरे बच्चे हुए और मैं अपना वो सपना मन में संजोए हुए चलने लगा जब बच्चे बड़े हुए तब मैंने उनके सामने ये प्रस्ताव रखा । मेरे बच्चे बचपन से ही पढ़ाई में अव्वल थे और अब भी है ।?वो कर सकते हैं यही सोच कर मैंने उन से अपने मन की बात कही । मैंने कभी अपने बच्चों पे कोई जोर जबरदस्ती नहीं किया बस अपने बच्चों को रास्ता दिखाया। बेटे ने पिता की इच्छा का मान रख कर अपना कदम आगे बढ़ाया और सबकुछ छोड़ कर पढ़ाई में लग गया । जो बच्चा आधा घंटा एक स्थान पे बड़ी मुश्किल से बैठ पाता था । आज वो दिन के दस दस घंटे? बैठ कर पढ़ाई करता है । मेरे बच्चे पढ़ने में बहुत होशियार है पर उनका पढ़ने में मन नहीं लगता है ।

वो एक फुटबाल खिलाड़ी हैं । उसे फुटबाल खेलना है?!? खेल उसकी पहली पसंद है? और फुटबाल? मैं तो उसकी जान बसती है ।? बिल्कुल मुझ पे गया है ।?खेलकूद एथलैटिक्स से उसे काफी लगाव है । आज भले ही कुछ समय के लिए उसका खेलकूद सब रुक गया है मगर मैं चाहूंगा कि भविष्य में वो फुटबाल जरूर खेले और और अपने सपने को साकार करें । वैसे आजकल अपने माता पिता के सपनों की खातिर अपने सपनों से किनारा कर लेने वाले बच्चे बहुत कम देखने सुनने को? मिलते है ।

मेरे बच्चे उन में से एक है? । यह मेरा सौभाग्य है? ।। मैं ईश्वर का आभारी हूं जो उन्होंने मुझे ऐसे बच्चे दिए । आज साहब जी कुछ अधिक ही भावुक हो रहे थे । जब से उन्हें यह बात पता चली है कि छोटे मालिक ने सिर्फ उनकी खातिर उनके सपनों की खातिर ये कोर्स चुना है। आज एक पिता का दिल भावनाओं से भर गया है।

आज तो वो बस छोटे मालिक को दुआओं से सराबोर करते चले जा रहे हैं? अगले हफ्ते छोटे मालिक का जन्मदिन है और साहब जी ने तो अभी से तैयारियां शुरु कर देने को कह दिया है ।।

किरण काजल बेंगलुरु

शिक्षक अर्जुन धनंजय सिन्हा को मिला 'छत्तीसगढ़ गौरव अवॉर्ड'

छुरा – समाचार पत्र दबंग स्वर, रायपुर के छठवें स्थापना दिवस के अवसर पर वृंदावन सभागृह, रायपुर में भव्य एवं ऐतिहासिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था वक्ता मंच तथा दैनिक समाचार पत्र दबंग स्वर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित इस गरिमामय समारोह में छत्तीसगढ़ प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट कार्यों का अभिनंदन किया गया।



इस अवसर पर नगर के प्रतिष्ठित शिक्षक अर्जुन धनंजय सिन्हा को 'छत्तीसगढ़ गौरव अवॉर्ड' से सम्मानित किया गया। शिक्षा, योग, स्काउटिंग, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान, समर्पण और उल्लेखनीय सेवाओं के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया। शिक्षक अर्जुन धनंजय सिन्हा ने अपने कार्यों के माध्यम से शिक्षा के प्रसार, विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, योग के प्रति जागरूकता, स्काउटिंग गतिविधियों तथा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाज के प्रति उनकी सक्रिय सहभागिता और रचनात्मक कार्यों ने उन्हें एक समर्पित शिक्षक के साथ-साथ साहित्य एवं संस्कृति के प्रति प्रतिबद्ध व्यक्तित्व के रूप में विशिष्ट पहचान दिलाई है। यह सम्मान उनके वर्षों के परिश्रम, निष्ठा और बहुआयामी योगदान का गौरवपूर्ण प्रतिफल है। उनकी उपलब्धि न केवल उनके लिए, बल्कि नगर एवं समूचे क्षेत्र के लिए भी गर्व और प्रेरणा का विषय है। शिक्षा और सामाजिक सरोकारों से जुड़े व्यक्तित्वों का इस प्रकार सम्मान किया जाना समाज में सकारात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सराहनीय पहल है। समारोह में प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रतिभाशाली व्यक्तियों का सम्मान कर उनकी उपलब्धियों को मंच प्रदान किया गया। आयोजन ने समाजसेवा, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति और जनकल्याण के क्षेत्र में समर्पित भाव से कार्य करने वाले लोगों का उत्साहवर्धन किया। अर्जुन धनंजय सिन्हा को प्राप्त 'छत्तीसगढ़ गौरव अवॉर्ड' उनकी कर्मनिष्ठा, सामाजिक प्रतिबद्धता और बहुआयामी प्रतिभा का सम्मान है।उनकी यह उपलब्धि निश्चित रूप से युवा पीढ़ी, शिक्षकों तथा समाज के लिए प्रेरणास्रोत बनेगी और समाजहित में निरंतर उत्कृष्ट कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करेगी। सिन्हा ने इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार तथा वक्ता मंच अध्यक्ष राजेश परते, प्रधान संपादक पं. पी.के. तिवारी, संयोजक शुभम साहू एवं सभी आयोजकों का आभार व्यक्त किया। सिन्हा ने मिले सम्मान का संपूर्ण श्रेय अपने माता पिता डॉ. के.आर. सिन्हा, राम बाई सिन्हा तथा कला कुमार सिन्हा, विमला सिन्हा एवं सभी गुरुजनों, बड़े बुजुर्गों के मार्गदर्शन और आशीर्वाद को दिया। सिन्हा को सम्मानित किए जाने पर साहित्यकार ललित साहू, देवनारायण यदु, भारत स्वाभिमान न्यास के जिलाध्यक्ष संतराम कंवर, ठेठवार यादव समाज के प्रांतीय उपाध्यक्ष एवं नवाचारी शिक्षक शंकर लाल यदु, श्रीराघवेंद्र मानस संघ के अध्यक्ष जागेश्वर ध्रुव, उपाध्यक्ष रोहित जगत, सहसचिव खोरबाहरा निषाद, शाकंभरी मगर समाज के प्रांतीय संचालक हेमलाल पटेल, नेशन्स प्राइड पब्लिक स्कूल के प्राचार्य संतोष निषाद एवं कृष्णेश यदु, सहित अनेक गणमान्य नागरिकों एवं शुभचिंतकों ने बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित की हैं।

देहदान का प्रेरणादायी संकल्प

मानवता के नाम महादान

उज्जैन जिला ब्यूरो प्रमुख। जवाहर डोसी पीयूष

प्रख्यात समाजसेवी एवं दैनिक अग्निपथ के संपादक श्री अर्जुनसिंह जी चंदेल ने गीताभवन न्यास,बड़नगर के माध्यम से न्यास अध्यक्ष श्री हरिकिशन मेलवानी के सहयोग से आर.डी.गार्डी मेडिकल कॉलेज,उज्जैन को मरणोपरांत देहदान का संकल्प पत्र प्रेषित किया। इस पुनीत पहल पर मेडिकल कॉलेज के एनाटॉमी विभागाध्यक्ष डॉ.मनीष पाटिल द्वारा उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान कर शुभकामनाएँ एवं हार्दिक धन्यवाद प्रेषित किया गया। महर्षि दधीचि की परंपरा को नमन! देहदान महादान–चिकित्सा शिक्षा एवं मानवता की अमूल्य सेवा।



बच्चें बताएंगे कोन सी पुस्तक पसंद है



प्राय: चर्चा रहती है कि बच्चें मोबाइल से चिपके रहते हैं। बाल पुस्तकें पढ़ने में रुचि नहीं रही। इनकी जगह मोबाइल या टीवी पर कार्टून आदि देख कर या पुस्तक पढ़ कर काम चला लेते हैं। माता पिता टोकते भी हैं तो मानते नही। वे भी कोर्स की किताब पढ़ने पर ही जोर देते हैं। आज के दौर में गिनती के अविभावक होंगे जो बच्चों के लिए कोई बाल पत्रिका बाजार से ला कर देते होंगे। अमूमन कहा जाता है किताबें पढ़ने का झंझट कोन मोल ले जब की इंटरनेट पर सब उपलब्ध है। एक बात और जितने भारी परिमाण में बाल कृतियां छप रही हैं, बाल साहित्य लिखा जा रहा है वह बच्चों तक पहुंच कितना रहा है यह भी यक्ष प्रश्न है।



प्रतिवार का विधान होने से दादा दादी , नाना नानी द्वारा सुनाइजने वाली कहानियाकी लुप्त हो जाने और इंटरनेट के प्रभाव से बाजार में चलने वाली बाल पत्रिकाएं जबरदस्त रूप से हांसिये पर आ गई हैं। इस संदर्भ में जब एक न्यूज एजेंसी से जानकारी जुटाई तो यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जहां 1970 - 80 के दशक में केवल कोटा में ही लगभग 500 से अधिक बाल पत्रिकाएं अविभावक बच्चों के लिए ले जाते थे वह संख्या घट कर अधिकतम 7 - 8 अविभावकों तक आ गई है। एजेंसी का मानना है इंटरनेट और बच्चों की बाल पत्रिकाएं पढ़ने में अरुचि प्रमुख वजह है। बच्चों की चर्चित पत्रिका चंपक 500 से घट कर 25 पर आ गई।

लोटपोट, चंदामामा, पराग, बाल भारती,बालहंस, सुमन सौरभ का प्रकाशन बंद हो गया या इनमें एकाध छपती भी हों तो कोटा में कहीं नहीं आती। जबकि सत्तर के दशक में इनके अच्छे खासे बाल पाठक थे। आज चंपक के साथ - साथ कार्टून बुक अक्कड़ बक्कड़, बाल भास्कर और अंग्रेजी में मैजिक पॉट की कुछ प्रतियां आती हैं और ये भी 99 प्रतिशत पुस्तकालयों अथवा कुछ विद्यालयों तक जारी है।

देश के रेलवे स्टेशनों पर ए. एच. व्हीलर की सभी दुकानें बंद हो चुकी हैं, जिनसे यात्रा के दौरान पढ़ने के लिए बच्चें बाल पत्रिकाएं लेते थे। देश की अन्य बाल पत्रिका ज्यादातर इंटरनेट पर हैं या उनके सदस्यों तक पहुंचती हैं।

चर्चा बाल साहित्यकारों द्वारा लिखी जाने वाली बाल कृतियों की करें तो वे भी आपस में लेनदेन तक सीमित हैं। बच्चों तक उनकी पहुंच एक - दो प्रतिशत भी हो तो बड़ी बात है। हां !

समीक्षा करने वाले जरूर इन्हें पढ़ लेते हैं या इन पर कोई पुरस्कार लेखक को मिल जाता है। इन तथ्यों की रोशनी में कह सकते हैं कि बच्चों द्वारा बाल पुस्तकें पढ़ने की प्रवृति लगभग लुप्त होने के कगार पर है। जबकिबाल साहित्य बच्चें नैतिकता, संस्कार, जीवन के प्रति साकारत्मक भाव, नागरिक चेतना आदि, आदर्श आदि सीखते थे और उनके ज्ञान वृद्धि होती थी।

बाल साहित्य नहीं पढ़ने के निराशा भरे माहौल में पुन: बच्चों को बाल साहित्य से जोड़ने और बाल पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करने की सोच से संस्कृति,साहित्य,मीडिया फोरम कोटा तीन साल से मिशन बाल मन तक अभियान चला रहा है। इस के अंतर्गत अब मिशन द्वारा आगामी जनवरी - फरवरी माह में ' बच्चों को बाल साहित्य पढ़ने का अभियान' चलाने का निर्णय लिया है। बच्चों को बाल पुस्तकें पढ़वाई जाएंगी और वे बताएंगे कि कौन से पुस्तक, कहानी या कविता उन्हें अच्छी लगी। वे क्या पढ़ना पसंद करेंगे। इसके माध्यम से प्रयास किया जाएगा कि बच्चों में मोबाइल की अपेक्षा बाल साहित्य पढ़ने की आदत पुन: विकसित हो।

इस कार्य में साहित्यकारों, शिक्षकों, साहित्यिक संस्थाओं का सहयोग प्राप्त किया जाएगा। इन सभी से विनम्र आग्रह है यदि आप इसे बच्चों और बाल साहित्य के विकास की दृष्टि से उपयुक्त समझते हैं तो स्वेच्छा से पहल कर आगे आएं और अपनी सक्रिय भागीदारी निभाएं।

डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
लेखक एवम् पत्रकार

संवाद

1. आज मोबाइल ने बच्चों की तर्क शक्ति और विचार शक्ति खत्म कर दी है जो बाल पुस्तकों से आती थी। हाड़ोती में यह अभियान एक दिन रंग जरूर लायेगा। न जाने इनमें से कोई बच्चा साहित्यकार बन जाए और उस समय वह कहे की यह अभियान नहीं चलता तो मैं साहित्यकार नहीं बनता।

साहित्यकार जितेंद्र निर्मोही, कोटा

2. संस्कृति,साहित्य,मीडिया फोरम ने जिस तरह तीन सालों में बच्चों को साहित्य से जोड़ने का प्रयास किया है आज कई बच्चें कविता और कहानियां लिखने लगे हैं। अब बाल साहित्य से जोड़ने के लिए बाल साहित्य का अभियान निश्चित रूप से बच्चों को किताबों से जोड़ेगा। किताबें पढ़ने से जो एकाग्रता बनती हैं और ज्ञान, अदब, संस्कृति, तहजीब सीखने को मिलेगी जिसका आज नितांत अभाव हो गया है।

एडवोकेट अख्तर खान ' अकेला ', कोटा

3. मेरा अपना अनुभव है की यदि बच्चों को अवसर और परिवेश प्रदान किया जाए तो बच्चे अपनी जिज्ञासा के रहते बाल पुस्तकें पढ़ते हैं और निश्चित ही आगे भी पढ़ेंगे। सम्प्रयास ये नही है कि बच्चें ऐसी पुस्तकें पढ़ना नहीं चाहते वरन् उन्हें अविभावक ही अपनी उदासीनता से ऐसा माहोल प्रदान नहीं कर रहे। वे सोचते हैं कि इससे पढ़ने से बच्चे का ध्यान अपनी कक्षा - कक्षीय पढ़ाई से भटकेगा। इसीलिए वे कोर्स की किताबें ही पढ़ने और उनसे सम्बन्धित कार्य पर ही निर्देशन करते हैं। पहले अविभावक पाठ्यक्रम के साथ ज्ञान और संस्कृति से समन्वित और सहयोगी ऐसी सहायक पुस्तकों का महत्व समझते थे। उनकी सोच थी कि अच्छी किताबें पढ़ने से बच्चा अच्छी बातें सीख कर अपनी समझ को समृद्ध करेगा और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित रहेगा। वर्तमान में पढ़ाई में सर्वाधिक अंक लाने की होड़ में बच्चे व्यवहारिक जीवन की मूलभूत नैतिकता और जीवन आदर्शों से छिटक रहे हैं। इस पर अविभावकों का भी ध्यान उतना नहीं है जितना आवश्यक और अपेक्षित है। निश्चित रूप से यह अभियान बच्चों को पुनः बाल साहित्य से जोड़ने में अपनी अहम् भूमिका निभाएगा ।

कथाकार और समीक्षक विजय जोशी, कोटा

4. स्क्रीन मानसिक तनाव, चिंता, अवसाद निकट दृष्टि दोष बढ़ाता है जबकि पुस्तकें पढ़ने से इनसे बचाव तो होता ही है वे मनोरंजन कर तनाव दूर करती हैं। पुराने समय में लोग जब भी मन अशांत होता था कोई पुस्तक ले कर पढ़ने बैठ जाते थे। बच्चों में छूट गई इस आदत को पुनर्जीवित करने में यह अभियान स्वास्थ्य की दृष्टि से भी कारगर होगा। इसमें पहल कर सबको आगे आना चाहिए।

मनोरोग विशेषज्ञ डॉ. एम.एल.,,अग्रवाल, कोटा

5. बच्चें भी साहित्य से जुड़े इस बारे में शायद ही कोई सोचता हो। आपने यह चिंतन कर मिशन बाल मन चलाया महत्वपूर्ण कार्य है। बाल साहित्य पढ़ कर बच्चे समीक्षा करेंगे यह तो बहुत बड़ा काम हो जायेगा। बच्चों का मनोविज्ञान आगे आएगा जो बताएगा की उनके लिए कैसा साहित्य लिखा जाएं।

कवि विश्वामित्र दाधीच, कोटा

6. बहुत ही सकारात्मक शुरुआत।आज के बच्चे पढ़ना भूलते जा रहे हैं। उनमें पढ़ने की रुचि और आदत डालना बहुत जरूरी है।

राजकुमार जैन ' राजन ', अकोला

7. बच्चें बाल साहित्य पढ़ेंगे तो उनमें जीवन मूल्यों को सीखने के साथ - साथ शब्द ज्ञान में वृद्धि होगी, सोचने और समझने के साथ कुछ नया करने की जिज्ञासा भी बढ़ेगी। आत्मविश्वास भी बढ़ेगा और सबसे बड़ा लाभ स्वाध्याय की आदत विकसित होने से स्क्रीन का समय किताबों में लगेगा। सरकार को चाहिए कि ऐसा अभियान पूरे देश में चलाए ।

गृहणी मृदुला अग्रवाल, पंचकुला, हरियाणा

आत्म चिंतन

जिंदगी में सबसे प्रेम अपनत्व बनाएं रखें



कभी हँसते हुए छोड़ देती है ये
जिंदगी कभी रोते हुए छोड़ देती है
ये जिंदगी न पूर्ण विराम सुख में,
न पूर्ण विराम दु:ख में, बस जहाँ
देखो वहाँ अल्पविराम छोड़ देती है
ये जिंदगी प्यार की डोर सजाये
रखो, दिल को दिल से मिलाये
रखो, क्या लेकर जाना है साथ मे
इस दुनिया से, मीठे बोल और
अच्छे व्यवहार से रिश्तों को बनाए
रखो। आपका हर दिन शुभ
मंगलमय हो ऐसी ईश्वर
से कामनाएं। जय जगद्गुरु
भगवान महामुनि महर्षि श्री
गर्गाचार्य ऋषि।

(गुरु) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)
द्वारा प्रिय मित्र सवाईराम पन्नू, श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, उण्डू, बराजस्थान